रिकॉर्ड: तने रात गंवाई सो ... शुक्रवार ओम शान्तिः प्रातः क्लास 5-1-1968
रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते है। पढ़ाते भी है क्यों कि नालेज फुल है नां। जरूर आत्मा ही नालेज फुल है। परन्तु कर्मइन्द्रियों बिना वो बता कैसे सकेगी। अब यह गीत तो मनुष्यों का बनाया हुआ है। माला फेरते-2 कितने युग हुये है यह तो कोई भी जानते ही नही है। ऐसे ही गीत बना दिया है। पहले-2 तो बाप की पहचान होनी चाहिये। बाप ही की महिमा भी गाते है कि परमात्मा नमः। अब उस पी-3 का नाम तो चाहिये नां। उनका नाम है शिव। आत्मायें तो सभी है। आत्माओं के पिता का नाम है शिव परमात्माये नमः। वो है तो निराकार ही फिर भी उनका नाम है। शिव बाप। और सालग्राम बच्चे। कहीं पर भी तुम भाषण करते हो तो पहले ही पहले नाम लेना है शिव परमात्मये नमः। अब परमात्मा कौन है? क्या परमात्मा और भगवान मे फर्क है? है तो एक ही। उनकी पुरी-पुरी महिमा करनी चाहिये। जैसे कानफ्रेन्समे जाते है। पहले-2 तो परमपिता परमात्म की महिमा पर समझाना चाहिये। परमात्म कौन है। हम बाप की महिमा करते है। उनका नाम है शिव। वो ऊंच ते ऊंच है। उनको ही ईश्वर भी भगवान भी कहते है। पतित पावन भी है। वो ह ज्ञान का सागर सुख का सागर, सम्पति का सागर है। सुख का सागर है। शान्तिः का सागर है। तो जरूर शान्ति भी तो वो ही स्थापन कर सकता होगा नां। उनसे ही वर्सा मिल सकता है। यहां पर तो सभी कहते है कि विश्व मे शान्ति कैसे हो। पहले-2 तो यह पता होना चाहिये कि विश्व मे शान्ति थी ही कब। कब फिर होनी चाहिये। कब थी सो हम आपको भगवान की बताई हुई श्रीमत पर सुनाते है। ज्ञान का सागर तो वो ही बाप है। बाकी तो जो भी गुरु लोग है वो तो है भक्ति के। कर्म काण्ड के सागर। भक्ति मे तो कर्म काण्ड अनेक प्रकार के है। ज्ञान तो एक ही है जिससे ही सदगति होती है। ज्ञान सागर के ज्ञान ही से सदगति होती है। भक्ति है अज्ञान। उससे ही दुर्गति होती है। हम बाप की महिमा करते है वो शान्तिः का सागर ज्ञान का सागर है। यह तो जरूर समझाना चाहिये। जब सतयुग था तो एक ही देवताओं का ही धर्म था। बाप तो है ही स्वर्ग की स्थापना करने वाला। उनको ही राम भी कहा जाता है। राम के राज्य मे तो शेर कबरी भी इकठे ही जल पीते थे। वहां पर अशान्तिः हो ही नही सकती है। अब है रावण राज्य। इसमे सभी आसुरी समप्रदाय है। अब आसुरी समः को दैवी समः श्रीमत ही बनाती है। पहले-2 तो बताना चाहिये कि शान्तिः स्थापन करने वाला ही बाप है। वास्तव मे तो हम आत्मा का स्वधर्म ही है शान्तः। जहां पर आत्मायें रहती है वो भी है शान्तिः धाम। सतयुग को सुख धाम कहते है। कलयुग है दुःखधाम। तमोप्रधान है। तो फिर विश्व मे शान्तिः कैसे हो सकती है। शान्तिः तो होगी ही शान्तिधाम में। यहां पर तो शान्तिः तभी थी जबकि एक ही धर्म तो एक ही राज्य था बाप जो पवित्रता का सागर शान्ति का सागर वो ही स्थापना करते है। सतयुग में सुख भी शान्ति भी थी ताली बज ना सके क्योंकि धर्म ही एक था। उसको कहा ही जाता है हेवन। कहते भी है कि 5000 वर्ष हुए जबकि देवी देवताओं का राज्य था। विश्व में शान्ति थी फिर वो ही रिपीट होगा। अब यह तो तमो प्रधान दुनियां है मनुष्य सभी तमो प्रधान भ्रष्टाचारी तथा पत्थर बुद्धि है। बोलो विश्व का मालिक बाप जो है उसने जो समझाया है वो हम आपको समझाते है। बाप ने कहा है कि मैं साधारण तन में आकर विश्व का कल्याण करता हू सतयुग की स्थापना करता हू। यह समझने की बातें है ना। पहले पहले तो महिमा करनी ही बाप की है। वो ही शान्ति सुख पवित्रता का सागर है। बाप कहते है कि इन विकारो पर जीत पहनो तो तुम पवित्र बन पवित्र दुनियां का मालिक बन जाओगे। तो जरूर संगम युग होगा तब तो मृत्यु लोक से अमर लोक में जावेगे। नई दुनियां को ही अमर लोक कहा जाता है। वो है आत्माओं का लोक जिसको ब्रहमाण्ड कहा जाता है। आत्मा बहुत छोटी बिन्दी है उनमें 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। जो पहले पहले आते है वो ही 84 जन्मों का चक्र लेते है। पिछाडी तक भी आते तो रहते ही है नां। आदम शुमारी बढ़ती ही जाती है। कोई तो

5-1-68

2

कोई तो एक दो जन्म ही पार्ट बजा कर बाकी तो टाईम शान्तिः धाम म रहते है। अब बेहद के बाप कहते है कि देह सहित देह के सभी धर्म छोडमामरकम् याद करो। तुम आत्माये भाइ-2 हो। एक ही बाप है। बच्चो को तो जरूर बाप से वर्सा चाहिये। तुमको मिला था। सतयुग मे तो एक ही धर्म था। बाकी सभी मुक्ति मुक्तिधाम मे थे। वर्सा देने वाला एक बाप ही है। बाप को जानने बिना मनुष्य अफिन है। यह अफनो की दुनियां है। आपस मे ही लड़ते झगडते रहते है। शान्तिः को ढूढ़ते रहते है। परन्तु ज्ञान का तीसरा नेत्र जरूर चाहिये। जब त्रिनेत्री त्रिकाल दृशी बने तो ही तो जान भी सके। आत्मा मे ज्ञान आता है। जैसे बाप मे भी तो ज्ञान है नां। बाप को जानने कारण निधणके बन गये है। अब तुमको कहते है कि शास्त्रार्थ करो। इससे क्या फायदा। वो तो शास्त्रो की आधारटी है। भक्ति मार्ग कैसे है नां। भक्ति मार्ग से तो नीचे उतरना ही होता है। बाप ने समझाया है कि तुम कैसे 84जन्म लेकर सीढ़ी नीचे उतरते हो। सतयुग मे तो तुम पुज्य थे। फिर से पुजारी बनते है। बाप तो पुजारी नही बनता है। जब पुज्य देवता बनते हो तो फिर पुजारी भी बनते हो। पुज्य हो तो पुजारी होते ही नही है। पुजारी है तो पुज्य नही है। शंकराचार्य भी शिव की पुजा करते है। तो पुजारी ही तो ठहरे नां। वो पुज्य कहला नही सकते। बाप जब आवे तब ही वो ही पुज्य बनावे। सतसेप्रधान ही तो पुज्य होते है। उवहो रावण राज्य ही नही होता है। रावण सबका दुश्मन है। जैसे शिव बाबा भारत मे आते है तो रावण का राज्य भी भारत मे होता है। रावण का कोई भी मनुष्य नही है। पाचं विकारो को ही रावण कहा जाता है। इस समय तो है ही रावण का राज्य। देह-अभिमन तो सभी मे है। देहीअभिमनी तो एक भी नही है। सभी कहते है कि शान्तिः कैसे हो। वो तो जब परमपिता परमात्मा आये तभी तो स्थापना हो नां। हेवनली गाड फादर ही हेवन ही की स्थापना करते है। हेवन मे है शान्तिः। यहां हेल है। कोई भी मनुष्य यह बता नही सकेंगे कि विश्व मे शान्तिः कैसे होगी2 यह है ही तमोप्रधान दुनियां। इसको ही सतोप्रधान बनाना तो बाप का ही फर्ज है। सो अपना काम कर रहे है। एक धर्म की स्थापना और बाकी सभी अनेक धर्मो का विनाश हो जाना है। नही तो बताओ देवी देवताओ के राज्य की स्थापना कैसे हुई। क्या कोई लडाई की? नही। यह तो योग बल ही गाया जाता है। बाप ने ही सिखाया है। पहले पवित्र प्रवृती मार्ग था। अब अपवित्र प्रवृता मार्ग है। फिर पवित्र बनना है। सन्यासी लोग तो अनेको प्राकर की हठ योग सिखाते है। यह राज योग तो जो बाप ही सिखाते है। यह पुरुषार्थभी करवाना बाप का ही काम है। बाप आते ही है पुरुषोतम संगम युगे। शिव जयन्ति भी भारत मे ही मनाते है। रावण जयन्ति भी भारत ही मे मनाते है। रावण है दुशमन। शिव बाबा है सज्जन। वो दुगर्ति करता है। शिव बाबा सदगति देते है। इस समय सभी दुगर्ति मे ही पडे हुये है। सदगति के लिये तो ज्ञान चाहिये। ज्ञान भी है भक्ति वैराग। भक्ति है रात। फिर उनसे ही वैराग होता है। हमको अभी इस शोर पुराने विश्व से वैराग है। सन्यासी लोगतो सिर्फ घरबार ही छोडते है। वो भी फिर पैसो के ही लालच मे आ जाते है। वो कब भी राजयोग सिखा ही नही सकते है। निवृती मार्ग वाले प्रवृर्ती मार्ग का ज्ञान सिखा नही सकते। यह ज्ञान कोई मे भी नही है। इसलिये ही उनको कहा जाता है अन्धे की औलाद अन्धे। अन्धा बनाने वाला है रावण। सज्जा बनाने वाला है शिव बाबा। यह सृष्टीका चक्र कैसे फिरता है उसकी आद मध्य अन्त को जाना चाहिये नां। हमको तो शिव बाबा ने बनाया है। हम शिव बाबा की ओरिजिन ब्र, वि, शं की बायोग्राफी को जानते है। यह ब्र, वि, शं को तो सुक्ष्म वतन मे दिखाया है। परन्तु वो तो सुक्ष्म वतन मे होता कुछ भी नही है। सुक्ष्म वतन मे शंकर को नांग बलाये दिखा दी है, बैल आद कहां से आया। आत्मायें तो सभी इनकार्पोरियल वर्ल्ड मे रहती है जिसको ही ब्रहमतत्व भी कहते है। वहां रहती है। जैसे आकाश मे स्टारस खडे है वैसे ही निराकारी दुनियां मे आत्मायें भी ऐसे ही रहते है नम्बरवार। इन सभी बातों को समझने के लिए 7 रोज चाहिए। जो अच्छी रीत समझो। सात रोज मे सभी

5-1-68

सभी पाईन्ट्स समझाई जाती हैं। बाप को जानने से तुमको जीवन मुक्ति का वर्सा मिलेगा। स्वर्ग की प्राप्ती होगी। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। जितना जो जैसा पुरुषार्थ करेगा ऐसा पद पावेगा। यह गुप्त राज धानी स्थापन हो रही है। बाप भी हैं गुप्त। हम बच्चे भी गुप्त। योगबल से विश्व की बादशाही ले रहे हैं। गायन भी हैं दो लड़ते हैं मक्खन बीच में तीसरा खाता है। मुसलों से लड़ते हैं वह आपस में। बीच में मक्खन श्री कृष्ण खा जाते हैं। वही फर्स्ट प्रिन्स तुम दिखाते भी हो। कृष्ण की आत्मा ही गोरी फिर कृष्ण की आत्मा ही सांवरी। कृष्ण तो पीस स्थापन नहीं करते। गीता का भगवान कोई कृष्ण नहीं है। शिव हैं। यह ही बहुत बड़ी भूल हैं भारत में। श्री कृष्ण कीतेरा महिमा करेंगे सर्व गुण सम्पन्न · और वह तो हैं ज्ञान का सागर। अब गीता का भगवान पतितपावन कौन? गंगा पावन बनाती है क्या? पतित हैं तो तब तो जाते हैं ना। यह हैं सारा भक्ति-मार्ग। वास्तव में पतित-पावन तो बाप ही हैं। बाप कहते हैं माया पर जीत पाओ पावन बनो तो तो तुम जगत जीत बन जावेंगे। इन (ल०ना०) के राज्य में शान्ति थी। विश्व में एक ही राज्य था। शान्ति एक होती है सतयुग में दूसरा होती हैं निराकारी दुनिया में। तुम जो चाहते हो वह तो स्थापन हो रही है। हम ब्राह्मण से देवता बन रहे हैं। शुद्र से ब्राह्मण बनने लिए यह पढ़ाई है। अच्छी रीत समझाना चाहिए। छोड़ न देना चाहिए। घड़ी2 उन्हों के कान्फ्रेन्स आद तो होती ही रहती हैं। शान्ति कैसे हो सकती हैं तो तुमको समझाना हैं। विचार सागर मथन चलना चाहिए हम ऐसे 2 समझावेंगे। ज्ञान की धारणा हैं तो जरूर सुनावेंगे। ज्ञान की धारणा नहीं तो किसको समझाने के लायक नहीं। तो गोया नालायक ही कहेंगे। ज्ञान न हैं उनमें तो जरूर सभी विकार ही हैं। मनसा में तो आती हैं ना। मनसा में भी न आये ऐसी अवस्था को प्राप्त करना हैं। वह ज्ञानी तू आत्मा ही तख्तपर बैठने लायक बनती है। नहीं तो अनपढ़े पढ़े आगे मरे ही ढावेंगे। पिछाड़ी में तुमको सब मालूम पड़ेगा कौन फेल होते हैं। इसमें आसुरी गुण तो बिलकुल ही नहीं चाहिए। आसुरी गुण वाले को गुन्डा कहा जाता हैं। जिनमें क्रोध लोभ अहंकार आद है। बहुत मीठा बनना है। कभी ऐसी चलन न हो जो समझे कि यह तो गुन्डा है। बहुत पुरुषार्थ करना है। क्रिमनल आई बिलकुल ही सिविल आई बनानी है। क्रोध आता हैं तो कितना तंग करते हैं। क्रोधी को काम का नशा भी सताता है। झट पता पड़ जाता है यह देवी सम्प्रदाय हैं या आसुरी सम्प्रदाय। ज्ञान विगर हैं ही डायंस। कोई क्रोध करते हैं तो कहते हैं ना कुत्ते माफिक भूं भूं क्यों करते हो। आत्मा ज्ञान उठा नहीं सकती हैं तो जरूर अज्ञान ही होगा। सब शान्ति शान्ति मांगते हैं। पहले पहले तो महिमा करनी चाहिए बाप की। फिर समझाना चाहिए यह सुख-दुःख का खेल यहां ही हैं। हेविनली गाड फादर ही आकर हेविन स्थापन करते हैं। भारत ही सुखधाम बनता है। सतयुग में एक धर्म था। मांगते भी हैं एक राज्य हो। एक धर्म था जो अब प्रायः लोप हैं। (वनियन ट्री का मिशाल) भगवान पढ़ा कर सदगति को प्राप्त कराते हैं। मनुष्यों की गीता पढ़ते2 तो दुर्गति ही होती जाती है। यही गीता बाप सुनाते हैं तो सदगति हो जाती है। सर्व गुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण देवता बनते हैं। वह गीता सुनते2 तो कहते हमारे में कोई गुण नहीं है। तो बाप कितना समझाते है। परन्तु किसकी तकदीर में भी हो ना। बाप को ही जानते नहीं। बाप को भूलने से निर्गुण निधणके बन जाते हैं। सतोप्रधानसे सतो, रजो, तमो में आना ही है। शान्ति स्थापन करने वाला बाप ही हैं जो कर रहे हैं। यह पुरुषोत्तम संगम युग है। कान्फ्रेन्स में तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। धर्म के गुरु लोग तो बहुत ही आते हैं। यह सब हैं कलियुगी गुरु अब बाबाने तो समझाया। इस पाईन्ट पर रोज़ क्लास करो। हरेक समझावे तो पता पड़ जावेगा बुधि में कितनी धारण होती है। सब तो एक जैसे हो न सके। पुरुषार्थ करना चाहिए ऊंच ते ऊंच बनने का। पत्थर बुधि से पारस बुधि सतोप्रधान बनना है। जितना जो बना होगा उतना समझा सकेंगे। विश्व में शान्ति कैसे होती हैं यह समझाने वाले तो तुम ही हो। भूल बात ही यह है। मनुष्य तो बिलकुल ही हैं पत्थर बुधि। इसको कहा जाता है कांटों का जंगल। सतयुग को कहा जाता

5-1-68

हैं फूलों का बगीचा। बाप ही आकर फूलों का बगीचा बनाते हैं। द्वापर से फिर कांटों का जंग रावण राज्य शुरु होता है। परंतु अपने को रावण सम्प्रदाय के समझते थोड़े ही हैं। परंतु कांटों के जंगल में शान्ति कहां से आती है, रावण कौन है यह भी किसको पता नहीं है, बाप कहते हैं कितने इडियट्स बेसमझ हैं। तुम बाबा का नाम लेते रहो। बाबा ऐसे कहते हैं तो फिर कोई गुस्सा आद नहीं करेंगे। बोलो हम थोड़े ही कहते है यह तो भगवानुवाच है? तुम हो गाडली चिल्ड्रेन। वह फिर डागली चिल्ड्रेन बन जाते हैं। अल्लाह के बच्चे सो उल्लू के बच्चे बन जाते हैं। क्रोध देहाभिमान बहुत हैं। गाये भी हुये हैं अन्धे के औलाद अंधे। यह भी समझाना है परिस्तान में शान्ति होती हैं कब्रस्तान में हैं अशान्ति। बाप बागवान ही आकर फूलों का बगीचा बनाते हैं। वहां कांटा नहीं होता। रावण ही नहीं तो कांटा कैसे लगायेंगे। यह समझने की बात है। समझते कुछ नहीं हैं, तब ही कहा जाता है शेढ क्या समझे... इस समय सब हैं देहाभिमानी सान्डे। बाप आकर मनुष्य से देवता बनाते हैं। ब्राह्मण कुल में भी कितने होते हैं। सूक्ष्मवतन में तो कुछ हैं नहीं। यह सब सा० होते हैं। तुम बच्चे भी सा० करते हो। लाईट कैसे आती है, क्या होता है, उसका सा० होता है। बाकी सूक्ष्म वतन में कुछ नहीं हैं। मुख्य हैं ही मूलवतन और स्थूल वतन। सूक्ष्मवतन भी गाया हुआ है जो मुवी चलती हैं। बाकी इनकी हिस्ट्री जागराफी तो कुछ हैं नहीं। यह हैं ज्ञान का सा०। व्यक्त से अव्यक्त कैसे बनते हैं। अव्यक्त बने फिर तो चले जावेंगे। दिखाते हैं ऐसे फिरिश्ते बनते हैं फिर शरीर छोड़ देते हैं। यह सब हैं सा०। सूक्ष्मवतन का भी सा०। ज्ञान-योग की बातें नहीं हैं। बाबा तो कहते हैं ध्यान में भी टाईम वेस्ट होता हैं। तुम बच्चों तो बाबा ने समझाया अब समझाने लिए रिहलसल करो तो इन से हरेक की अवस्था का मालूम पड़ जावेगा। भूतों को भी भगाना चाहिए। नहीं तो सज़ाएं बहुत खानी पड़ें। पद भ्रष्ट हो जावेगा। अच्छा मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। और नमस्ते।

पत्र की कापीः-

नूरे रत्न कुमारकाबेटी प्रति रूहानी बाप व दादा का याद प्यार स्वीकार, बाद समाचार कि तार पाई। बाप दादा कहे कि अनेक सोसाईटियां अपना ही सिर्फ नाम निकालने वर्ल्ड पीस कान्फ्रेन्स आद इकट्ठी करते रहते हैं। जहां-तहां। परंतु कैसे वर्ल्ड में शान्ति चाहते हैं कोई अनुभव है? कब हुई थी? थी जरूर परन्तु कब कैसे सो बिचारे बिलकुल ही नहीं जानते। शिव बाबा ही प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा समझाते हैं। कान्फ्रेन्स वाले को समझाओ आज से 5000 वर्ष पहले, 3000 वर्ष बी फोर क्राईस्ट वर्ल्ड में पीस थी। जब सतयुगी डिटी सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी डिनायस्टी का विश्व भर में 100% पवित्रता, सुख, शान्ति, सम्पति का राज्य था। विश्व में एक राज्य एक भाषा, एक धर्म था। अब आयरन एज कलियुग में अनेक भिन्न-भिन्न धर्मों का भ्रष्टाचारी राज्य है। 100% अपवित्रता, दुःख, अशान्ति, निर्धनता है। ऐसे समय शान्ति हो कैसे सकती। शान्ति का सागर, ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर, सुख का सागर, परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव ही हैं। जो इस कल्प के आसपीसियस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग पर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा फिर से विश्व में 100% पवित्रता, सुख शान्ति सम्पति का अटल, अखन्ड, सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी दैवी स्वराज्य आधा कल्प लिए स्थापन कर रहे हैं। विश्व में शान्ति स्थापन करना तो ऊंचे ते ऊंच शिवबाबा का ही ड्रामा अन्दर पार्ट है। जिस ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त को सिवाय प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल बिगर कोई नहीं जानते। न देवतायें, न शुद्र सम्प्रदाय।

इनको चाहे लिख कर दो, चाहे समझाओ। समझाने में 15 मिनट लग सकते हैं। अच्छा लिख कर फिर पढ कर सुनाओ। फिर ओरली समझाओ। वा बाप शिव दादा ब्रह्मा ने पत्र में लिख भेजा हैं मधुबन आबू से ऐसा सुनाओ। ओम।

-: ********** :-ओमशान्ति-: ********** :-

डायरेक्शनः- बाप दादा कहे कि हरेक सेन्टर्स को हर मास का पोतामेल भेज देना है। अच्छा ओम।